शासकीय उपयोग हेतु

प्रतिवेदन क्रमांक-629

वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र द्वारा प्रसारित किये जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों का संबंधित जनजातीय समुदायों पर होने वाले प्रभाव तथा उपयोगिता का अध्ययन

(बैतूल जिले के चिचौली वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र के संदर्भ में)

वर्ष : 2017-18

निर्देशन - श्री पी.सी. मीना आई.ए.एस.
संचालक

मार्गदर्शन - श्री नीतिराज सिंह
संयुक्त संचालक
श्रीमती मधु गुप्ता
अनुसंधान अधिकारी

क्षेत्रीय कार्य एवं प्रतिवेदन - डॉ. सत्यप्रसाद भट्ट
अनुसंधान सहायक

आदिम जाति अनुसंधान एवं विकास संस्था, म.प्र. शासन
35, श्यामला हिल्स, भोपाल-462002
फोन : 0755-2661259, 2661375
E-mail: tribho@nic.in, www.trdimp.nic.in

अनुक्रमणिका

क्रमांक	अध्याय क्रमांक	विवरण	पृ. क्र.
1.	**अध्याय – एक**	प्रस्तावना (वन्या रेडियो की पृष्ठभूमि)	1–6
2.	**अध्याय – दो**	जनजातीय एवं क्षेत्र का परिचय	7–9
3.	**अध्याय – तीन**	वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र एवं संचालन की वर्तमान स्थिति	10–15
4.	**अध्याय – चार**	वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र से प्रसारित कार्यक्रमों का जनजातीय समुदाय पर प्रभाव	16–29
5.	**अध्याय – पाँच**	निष्कर्ष एवं सुझाव	30–44
6.	**परिशिष्ट –**		
	1.	व्यैक्तिक अध्ययन	35–37
	2.	वन्या रेडियो केन्द्र में उपलब्ध सामग्री की सूची	38–39
	3.	साक्षात्कार अनुसूची	40
	4.	उत्तरदाताओं की सूची	41–42
	5.	क्षेत्र भ्रमण के छायाचित्र	44–45

अध्याय – एक

प्रस्तावना

वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र की पृष्ठभूमि –

मध्यप्रदेश राज्य के जनजातीय क्षेत्रों के सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों, जनजातीय समुदाय तक राज्य शासन की जनकल्याणकारी एवं विकासोन्मुख योजनाएँ सुगमतापूर्वक उन तक पहुँचाने व उन्हें ज्ञात होने के उद्देश्य से वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की स्थापना राज्य शासन द्वारा की गयी। इसी उद्देश्य के चलते आदिम जाति कल्याण विभाग के उपक्रम वन्या द्वारा नवाचार करते हुये आठ वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्रों की स्थापना की गयी। यह अपने आप में एक देशभर में अनूठी पहल है, जहाँ रेडियो केन्द्र उस जनजातीय की बोली–भाषा में उन लोगों के लिये जनकल्याणकारी योजनाओं का प्रसारण किया जा रहा है।

इसके अतिरिक्त जनजातीय समाज की जीवनशैली, परम्परा एवं सस्कृति, बोली–भाषा, लोककला आदि के संरक्षण एवं संवर्धन के प्रयासों को भी सम्बल प्राप्त होता है। जनजातीय समुदाय को अपनी बोली–भाषा में जनकल्याणकारी योजनाओं का प्रसारण तथा समाचार सुनना उसकी रुचि व अपनेपन का अहसास कराना भी लक्ष्य रहा है।

वर्तमान में वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्रों को दस घंटे प्रतिदिवस का प्रसारण लक्ष्य प्रत्येक केन्द्र को दिया गया है। प्रत्येक रेडियो केन्द्र से पाँच घंटे सुबह प्रति दिवस कार्यक्रम का प्रसारण करना तथा उसी प्रसारण को पुनः शाम को किये जाने का प्रावधान रखा गया है। इसका उद्देश्य मात्र जनजातीय समाज में जागृति लाना ही नहीं है बल्कि दूरदराज क्षेत्रों में जीवनयापन करने वाले जनजातीय समुदाय को मुख्यधारा में लाना भी रहा है। रेडियो केन्द्र के माध्यम से विलुप्त होती बोलियों को संरक्षित करने के साथ–साथ संवर्धन करने का भी प्रयास किया जावेगा। इन रेडियो केन्द्रों की प्रसारण दूरी 15–20 किमी. तक है। रेडियो केन्द्रों का विवरण इस प्रकार है :–

क्रमांक	वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र का नाम	फ्रिक्वेन्सी	स्थापना दिनांक
1.	वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र शा. उत्कृष्ट उ.मा.वि. चिचौली, जिला–बैतूल (म.प्र.)	90.4 MHz	10 मई 2012
2.	वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र चन्द्रशेखर आजद नगर, भाबरा, जिला–अलीराजपुर	90.4 MHz	23 जुलाई 2011
3.	वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र खालवा, जिला खण्डवा	90.4 MHz	01 नवम्बर 2011
4.	वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र नालछा, जिला–धार	90.8 MHz	26 मार्च 2013
5.	वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र चांड़ा, जिला–डिण्डोरी	90.4 MHz	23 जुलाई 2011
6.	वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र शा. हाईस्कूल सेसईपुरा, जिला–श्योपुर	90.8 MHz	31 जुलाई 2012
7.	वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र बिजौरी, जिला–छिन्दवाड़ा	90.4 MHz	26 अगस्त 2013
8.	वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र मेघनगर, जिला–झाबुआ	90.4 MHz	परीक्षण प्रसारण

उपरोक्त केन्द्रों के अलावा भी वन्या द्वारा शा. उत्कृष्ट उ. मा. विद्यालय वैहर जिला–बालाघाट एवं शासकीय आदिवासी बालक आश्रम गुना में भी वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र खोलने में प्रयासरत है।

वन्या रेडियो द्वारा प्रसारित प्रमुख कार्यक्रमों की सूची इस प्रकार रखी गयी है, जिसमें वन्या रेडियो संकेत धुन के बाद केन्द्र का परिचय, वन्देमातरम एवं मध्यप्रदेश गान से रेडियो प्रसारण प्रतिदिन आरम्भ किया जाता है। विवरण इस प्रकार है :–

1. **चिंतन एवं भजन :–** जीवन को सीख देने वाले महापुरुषों के कथन पर आलेख का प्रसारण।

2. **स्थानीय बोली के कार्यक्रम** :– वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्रों से स्थानीय बोली में स्थानीय श्रोताओं की रूचि के अनुरूप कार्यक्रम का प्रसारण किया जाना। स्थानीय बोली में चिकित्सा संबंधी समस्या का निदान स्थानीय चिकित्सक द्वारा स्थानीय बोली में देना।

3. **बात पते की** :– वन्या रेडियो एवं यू.एन.एफ.पी.ए. के सहयोग से निर्मित ग्रामीण महिला एवं बच्चों के स्वास्थ्य जागरुकता कार्यक्रम का प्रसारण किया जाना।

4. **बाल सभा** :– वन्या रेडियो द्वारा जनजातीय बच्चों की प्रतिभा को सामने लाने के लिये रोचक एवं ज्ञानवर्धक कार्यक्रम का प्रसारण किया जाना।

5. **खेती किसानी :–** वन्या रेडियो द्वारा खेती किसानी के विशेषज्ञों से परामर्श कर समय–समय पर कौन–कौन सी फसल लगाई जाये एवं उनकी समस्याओं का निदान का प्रसारण।

6. **बढ़ते कदम** :– रेडियो वन्या शासन की कल्याणकारी योजनाओं को श्रोताओं तक पहुँचाने के लिये रोचक एवं संगीतमय रूप में उनका प्रसारण करना।

7. **वतन का राग** :– वन्या रेडियो केन्द्र द्वारा समय–समय पर स्वधीनता संग्राम के विषयों पर केन्द्रित कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाना।

8. **योजनाएँ–विशेषज्ञों से चर्चा** :– रेडियो वन्या द्वारा विभिन्न योजनाओं की जानकारी एवं उनसे अधिकाधिक लोगों तक पहुँचाने के लिए विशेषज्ञों से चर्चा कर कार्यक्रम का प्रसारण किया जाना।

9. **आज खास** :– वन्या रेडियो द्वारा जनजातियों की जीवनशैली, परम्परायें, इतिहास एवं स्थानीय स्तर पर होने वाली गतिविधियों का प्रसारण करना।

10. **मनोरंजक कार्यक्रम** :– रेडियो वन्या द्वारा जनजातीय समाज में प्रचलित गीत–गाथा एवं लोक संगीत के साथ ही फिल्मी गीतों का प्रसारण करना। इसके लिये वन्या रेडियो द्वारा फिल्मी गीतों के प्रसारण का सशुल्क अधिकार प्राप्त किया है।

11. **यू.एन.एफ.पी.ए.** वन्या रेडियो के साथ मिलकार जनजातीय समाज को स्वास्थ्य जागरुकता बढ़ाने की दिशा में कार्य कर रहा है।

अध्ययन के उद्देश्य –

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य इस प्रकार हैं :–

1. वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र की वर्तमान स्थिति का पता करना।
2. निर्धारित किये गये रेडियो प्रसारणों की स्थिति का पता करना, क्या वे प्रसारित हो रहे हैं।
3. निर्धारित समय पर केन्द्र द्वारा कार्यक्रमों का प्रसारण किया जा रहा है, ज्ञात करना।
4. प्रसारित कार्यक्रमों का जनजातीय समुदाय पर क्या प्रभाव पड़ा है, ज्ञात करना।
5. जनजातीय समुदाय में वन्या रेडियो केन्द्रों एवं प्रसारित कार्यक्रमों की क्या उपयोगिता है, का पता लगाना।
6. कल्याणकारी योजनाओं का लाभ, क्या प्रसारण के माध्यम से जनजातीय समुदाय को प्राप्त हो रहा का पता करना

उपकल्पना –

वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र द्वारा प्रसारित किये जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों का जनजातीय समुदाय पर सकारात्मक प्रभाव दिखाई देता है।

अध्ययन विधि –

प्रस्तुत अध्ययन के लिये साक्षात्कार अनुसूची, अनौपचारिक चर्चा, जनजातीय के बुजुर्ग व्यक्ति, शिक्षित युवाओं, जनप्रतिनिधियों तथा केन्द्र के कर्मचारियों से चर्चा उपरान्त जानकारी प्राप्त की गई। अध्ययन को पूर्ण करने में अवलोकन पद्यति का भी उपयोग कर पूर्ण किया गया है।

जिला–बैतूल

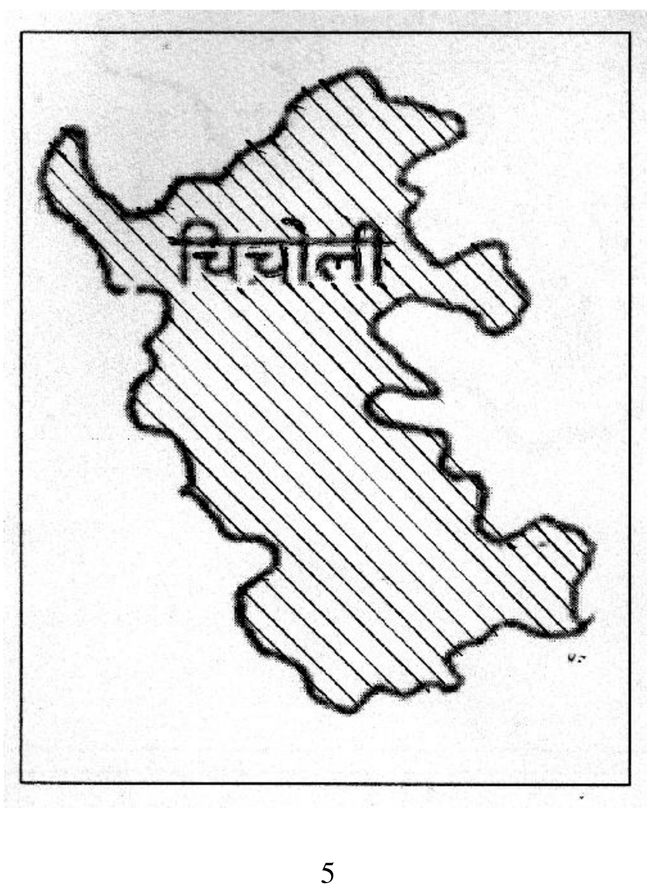

चिचौली
विकासखण्ड
(म.प्र.)
चिचोली
सर्वेक्षित गांव

अध्याय – दो

क्षेत्र एवं जनजातीय परिचय

बैतूल जिला जनजातीय संस्कृति का अनूठा केन्द्र है। यहाँ निवासरत प्रमुख जनजातियों में गोंड, कोरकू, मवासी, परधान व निहाल हैं। जिले के दस विकासखण्डों में सात विकासखण्ड आदिवासी विकासखण्ड है। आदिवासी बाहुल्य बैतूल जिला दिल्ली–मद्रास रेल लाइन पर भोपाल–नागपुर के मध्य स्थित है। बैतूल के दक्षिण में सतपुड़ा की पर्वत श्रृंखलायें तथा उत्तर में घाटी तथा दक्षिण में बरार का मैदान है। यह जिला 20^0–22'' से 22^0–23'' उत्तरी अक्षांश एवं 77^0–10'' से 78^0–33'' दक्षिण देशान्तर के मध्य स्थित है। इसके उत्तर में होशंगाबाद पूर्व में छिंदवाड़ा, पश्चिम में खण्डवा एवं हरदा जिले तथा दक्षिण में महाराष्ट्र राज्य लगा हुआ है। समुद्र सतह से यह 365 मीटर की ऊँचाई पर बसा है। जिले को मुख्य रुप से चार भागों में क्रमशः सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला, तवा मारेण्ड घाटी, सतपुड़ा पठार व ताप्ती की घाटी में बांटा गया है।

प्रशासनिक व्यवस्था के मान से जिले को पाँच तहसीलों व 10 विकासखण्डों में विभक्त किया गया है। जिले के दस विकासखण्डों में 07 विकासखण्ड आदिवासी विकासखण्ड तथा 03 सामुदायिक विकासखण्ड है। जिले में 07 नगर तथा 558 ग्राम पंचायतें व 03 नगर पालिकाऐं भी हैं। जिले में 13 राजस्व निरीक्षक मण्डल, 262 पटवारी हल्के और 16 आरक्षीय केन्द्र हैं। जिले में 02 वृहद आदिवासी परियोजनायें बैतूल एवं भैंसदेही है।

जिला बैतूल की विकासखण्डवार वर्ष 2011 की जनसंख्या

क्रमांक	विकासखण्ड	कुल जनसंख्या	जनजातीय जनसंख्या	जनजातीय प्रतिशत
1.	बैतूल (आ.वि.)	66219	68877	41.44
2.	चिचौली (आ.वि.)	77513	55348	71.04
3.	घोड़ा डोंगरी (आ.वि.)	139904	86552	61.87
4.	शाहपुर (आ.वि.)	107350	73518	68.48
5.	भैंसदेही (आ.वि.)	126410	76916	60.85

6.	आठनेर (आ.वि.)	94874	50425	53.15
7.	भीमपुर (आ.वि.)	150724	129179	85.59
8.	भीमपुर (आ.वि.)	126080	सामुदायिक विकासखण्ड	सामुदायिक विकासखण्ड
9.	प्रभातपट्टन	131022	सामुदायिक विकासखण्ड	सामुदायिक विकासखण्ड
10.	आमला	145991	सामुदायिक विकासखण्ड	सामुदायिक विकासखण्ड

मध्यप्रदेश एवं बैतूल जिले में जनजातीय जनसंख्या का लिंगीय विवरण जनगणना वर्ष 2011 –

क्रमांक	**वर्ग**	**मध्यप्रदेश**	**जिला बैतूल**
1.	पुरुष	7719404	333166
2.	महिलायें	7597380	333852
	योग	15316784	667018

मध्यप्रदेश एवं बैतूल जिले में गोंड जनजातीय जनसंख्या का लिंगीय विवरण जनगणना वर्ष 2011 –

क्रमांक	**वर्ग**	**मध्यप्रदेश**	**जिला बैतूल**
1.	पुरुष	2549973	234055
2.	महिलायें	2543151	236689
	योग	5093124	470744

चिचौली विकासखण्ड –

चिचौली विकासखण्ड जिला मुख्यालय से 35 किलोमीटर की दूरी पर बैतूल इन्दौर राष्ट्रीय राज क्रमांक 59–ए पर स्थित है। जनगणना वर्ष 2011 की जनगणना अनुसार कुल जनसंख्या 77513 है। जिसमें आदिवासी जनसंख्या 55348 है। जिले में आदिवासी

जनसंख्या 71.04 प्रतिशत है। आदिवासी विकासखण्ड चिचौली गोंडवाना क्षेत्र के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ आज भी आदिवासियों में साक्षरता प्रतिशत 31 है। जबकि विकासखण्ड की साक्षरता प्रतिशत 62 है। चिचौली विकासखण्ड मुख्यालय वर्तमान में तहसील एवं जनपद मुख्यालय भी है। विकासखण्ड चिचौली में 03 हायर सेकेण्डरी स्कूल एवं 12 हाईस्कूल कार्यरत हैं, समस्त शालाएँ आदिवासी विकास विभाग द्वारा संचालित हैं। चिचौली विकासखण्ड का कुल क्षेत्रफल 431.63 वर्ग किलोमीटर है, जिसमें 62 प्रतिशत भाग वनाच्छादित हैं।

गोंड जनजाति –

चिचौली विकासखण्ड में सबसे ज्यादा 62 प्रतिशत गोंड जनजाति की जनसंख्या है। कुल आदिवासी जनसंख्या विकासखण्ड में 71.04 प्रतिशत है। विकासखण्ड चिचौली में 75 प्रतिशत गोंड समुदाय की मासिक आय 1500 रुपये से भी कम है, 83 प्रतिशत गोंड समुदाय आज भी समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ नहीं देख पाते हैं। इस विकासखण्ड में गोंड जनजाति के बच्चें 5वीं कक्षा तक 24 प्रतिशत, 8वीं तक 19 प्रतिशत, 12वीं तक 19 प्रतिशत तथा उच्च शिक्षा में मात्र 5 प्रतिशत ही पहुँचते हैं। इस समुदाय के 15 प्रतिशत के पास ब्लेक एण्ड व्हाइट टी.वी., 15 प्रतिशत के पास रंगीन टी.वी. है।

दूर–दराज के जंगलों में निवासरत होने के कारण आज भी गोंड समुदाय मुख्यधारा में पूर्णतः शामिल नहीं हो पाये हैं। शिक्षा का स्तर कम होने के कारण आज भी शासन की विकास नीतियों को ये नहीं समझ पाते हैं, जिससे इन्हें उनका समुचित लाभ नहीं मिल पाता है, आज भी गोंड जनजातीय समुदाय भगत–भूमका (ओझा–तांत्रिक), जादू–टोना जैसी बातों में विश्वास करते हैं।

आज भी ये लोग अपनी स्वास्थ्य संबंधी बिमारियों को जंगली वनौषधि से ही ठीक करते हैं, आधुनिक स्वास्थ्य केन्द्रों में कम ही जाते हैं, उच्च शिक्षा के प्रति कम लगाव रहता है, तकनीकी शिक्षा के अभाव में वे अपनी आर्थिक जरुरतों को पूरा करने में असमर्थ रहते है, अतः उन्हें कृषि से संबंधित शिक्षा दिया जाना उचित प्रतीत होता है।

अध्याय – तीन

वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र एवं संचालन की वर्तमान स्थिति

वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र शा. उत्कृष्ट उ.मा. विद्यालय चिचौली, जिला बैतूल में 10 मई 2012 में स्थापित किया गया था।

इस केन्द्र से रेडियो फ्रिक्वेंसी 90.4 MHz रखी गयी है। रेडियो केन्द्र शा. उत्कृष्ट उ.मा. विद्यालय के पूर्व से निर्मित दो कक्षों में संचालित है, बड़े कक्ष को दो भागों में बाँटकर एक प्रसारण कक्ष बनाया गया है। रेडियो केन्द्र के लिये विधिवत अलग से कोई भवन तैयार नहीं किया गया।

दोनों कक्षों की दिवाल व फर्श की लकड़ी पर दीमक लगी हुई है, जिसका उपचार नहीं किया गया है, वन्या भोपाल के अधिकारियों द्वारा भ्रमण के दौरान केन्द्र के मानदेय पर रखे गये कर्मचारियों द्वारा वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत कराया गया है, रेडियो केन्द्र के बाहर रखे जनरेटर पर भी कोई शेड का निर्माण नहीं किया गया है। वर्ष 2012 से जनरेटर बरसात के मौसम से लेकर गर्मी तक खुला रखा गया है, उसका रखरखाव किया जाना आवश्यक है, रेडियो केन्द्र की वाउन्ड्री के अन्दर बाहरी लोगों द्वारा कार पार्किंग की जाती है।

रेडियो केन्द्र द्वारा प्रस्तुत की गयी सामग्रियों की सूची में कुछ सामग्रियों को खराब बताया गया है, बजट के अभाव में उन्हें ठीक कराया जाना मुश्किल हो रहा है।

केन्द्र संचालन की व्यवस्था की स्थिति –

सामुदायिक रेडियो केन्द्र :–

शासकीय विद्यालय चिचौली, जिला बैतूल से प्रस्तावित रेडियो केन्द्र के संचालन की कार्ययोजना इस प्रकार प्रस्तुत की गयी थी :–

- प्रस्तावित सी.आर.एस. के कवरेज में लगभग 48 गाँव आ रहे हैं, जहाँ पर गोंड जनजाति की जनसंख्या अधिक है।
- इन 48 गाँवों को 6 सेक्टर में विभक्त करने का प्रावधान रखा गया।

- संचालन के लिये 8–8 गाँव का एक सेक्टर बनाकर उसमें एक–एक क्षेत्र समन्वयक, सह–उद्घोषक रखे जायेंगे।
- प्रत्येक गाँव में एक–एक पत्रपेटी होगी, जिसमें ग्रामवासी द्वारा तैयार कार्यक्रमों को लिखकर डाल सकेंगे। यह पेटी क्षेत्र समन्वयक द्वारा खोली जायेगी एवं इन पत्रों पर विचार–विमर्श कर चयनित किया जायेगा।
- उद्घोषक अपने–अपने क्षेत्र से कार्यक्रम रिकार्ड कर लायेंगे।
- प्रत्येक 2 सेक्टर पर एक सुपरवाइजर होगा जोकि, इन क्षेत्र समन्वयक को मार्गदर्शन प्रदान करेगा वह आवश्यक तकनीकी सहयोग प्रदान करेगा।

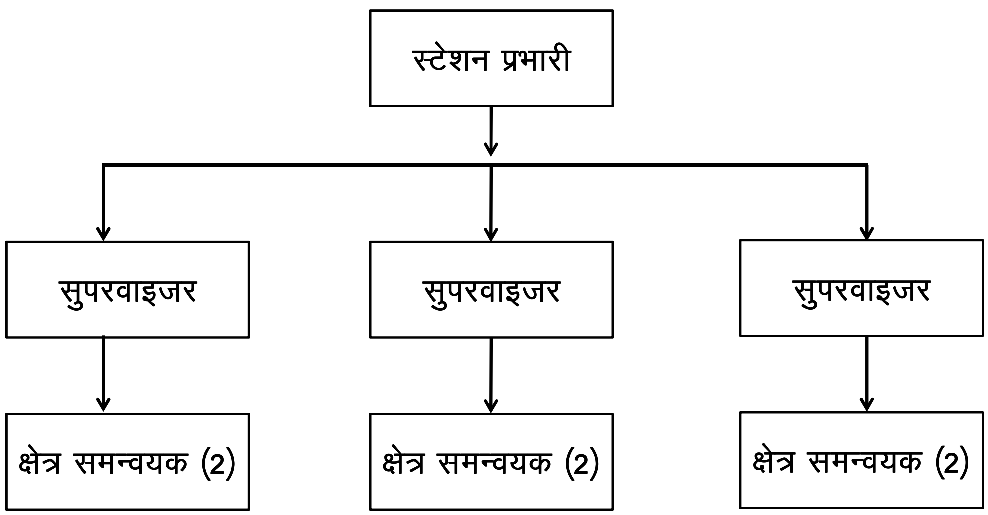

वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र चिचौली के लिये केन्द्र संचालन की व्यवस्था इस प्रकार रखी गयी थी, जो कि भ्रमण के दौरान केन्द्र के समन्वयक द्वारा बताई गई :–

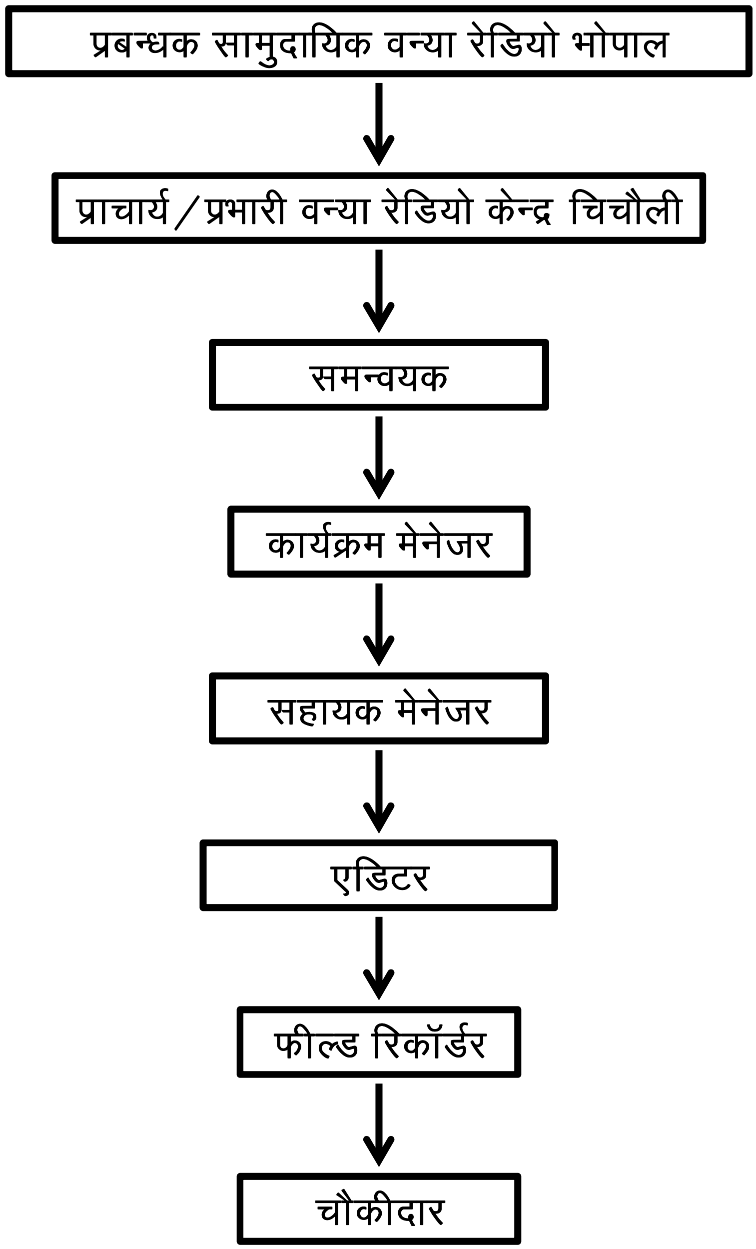

केन्द्र पर स्थानीय प्रशासकीय एवं वित्तीय प्रभार प्राचार्य वन्या रेडियो (प्राचार्य शा. उत्कृष्ट उ.मा. विद्यालय, चिचौली) को रखा गया है। शेष 6 पदों की सेवायें मानदेय पर रखने का प्रावधान रखा गया। उक्त व्यवसथा के अतिरिक्त वन्या प्रकाशन के आदेश/क्रमांक/वन्या/11/736 भोपाल दिनांक 22.09.2011 द्वारा सामुदायिक वन्या रेडियो केन्द्रों पर कार्यक्रम निर्माण की दरें इस प्रकार रखी गयी है :–

क्रमांक	विवरण	प्रदत्त राशि	अवधि
1.	स्क्रिप्ट राइटिंग (हिन्दी)	200.00	प्रति स्क्रिप्ट (30 मिनट)
2.	स्क्रिप्ट रुपांतरण (क्षेत्रीय भाषायें)	100.00	प्रति स्क्रिप्ट (30 मिनट)
3.	उद्घोषक / कम्पीयर	100.00	प्रतिदिन
4.	बाल प्रतिभागी	50.00	प्रतिदिन
5.	गायन मण्डली (8 व्यक्ति)	200.00	प्रति लोकगीत

उक्त दरों के अनुसार कार्यक्रम का परीक्षण कर एवं रजिस्टर में इन्द्राज कर भुगतान का प्रावधान रखा गया था।

वन्या सामुदयिक रेडियो केन्द्र चिचौली में उनके आदेश / क्रमांक / वन्या / 11 / 1026 भोपाल दिनांक 10.10.2012 द्वारा श्री अजय सिंह धुर्वे को समन्वयक तथा सुश्री नीलम गोहिया को सहायक के रुप में मानदेय पर रखा गया है। वर्तमान में भी पूरे सामुदायिक वन्या रेडियो केन्द्र का संचालन यही दोनों मानदेय पर रखे गये व्यक्ति कर रहे हैं, इसके अतिरिक्त एक भृत्य गजानंद उइके एवं एक चौकीदार श्री जयराम परते को भी मानदेय पर रखा गया है।

रेडियो प्रसारण की परिधि में जो गाँव आ रहे हैं, उनमें मुख्य इस प्रकार है :–

1. जागली, 2. सोनपुर खापा 3. खोखरा 4.जाम, 5. जाड़ीढाना, 6. चांद बेहड़ा, 7. बांडीखापा, 8. कटकुही 9. निवारी, 10. मलाजपुर 11. जामठी 12. रोझड़ा 13. कोंडर 14. चूड़िया 15. साबाढ़ाना 16. हरदू हरन्या 17. जामुनदाना 18. उंचागोहान 19. चूनाहजूरी 20. चूनागोसाई 21. सीता डोंनारी 22. मोतीपुर 23. जामली 24. गोधना 25. बारंगवाड़ी 26. वोरी 27. खैरी 28. सिपलाई 29. नसीराबाद 30. केसिया 31. कान्हेगांव 32. आवरियां 33. हरीवाड़ी 34. बीघवा 35. दूधिया 36. सिंगरई खापा 37. वीरपुर 38. असाड़ी 39. रतनपुर 40. जीढ़ू ढाना 41. सिगोर चौवड़ी 42. आलमपुर 43. असाड़ी धौल एवं 05 गांव अन्य और है, इस प्रकार कुल 48 गांव रेडियो केन्द्र की परिधि में हैं।

कार्यक्रमों के प्रसारण की स्थिति :–

वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र चिचौली, जिला बैतूल द्वारा 09 अक्टूबर 2018 से प्रसारित साप्ताहिक कार्यक्रम प्रसारण सूची में प्रातः 5.58 से 11.00 बजे प्रातः तक का

विभिन्न विषयों का प्रपत्र (चार्ट) तैयार किया गया और इन्हीं कार्यक्रमों को शाम 5.00 बजे से 10.00 बजे तक प्रसारित किया जाना रखा गया।

वन्या रेडियो केन्द्र चिचौली द्वारा अपने दूसरे प्रस्तावित प्रसारण समय–सारिणी में प्रसारण का समय 7.58 प्रातः से 1.00 बजे तक एवं पुनः सायंकाल 5.00 बजे से पुर्नप्रसारण चार्ट तैयार किया गया।

रेडियो केन्द्र के कर्मचारियों से चर्चा की गयी तो उनके द्वारा बताया गया कि वे केन्द्र में दिये गये समय अनुसार प्रसारण नहीं कर पाते और न ही टाइम टेबल में दिये गये प्रोग्राम तैयार कर पाते हैं, क्योंकि पाँच घंटे के प्रोग्राम तैयार करने के लिये ना तो संस्था में रिर्काडिस्ट है और न ही प्रोग्राम देने के लिये कलाकार। पदस्थ कर्मचारियों द्वारा उन्हें प्रदत्त मानदेय (मजदूरी) के मान से ही प्रोग्राम तैयार कर उनका प्रसारण किया जा रहा है।

रेडियो केन्द्र चिचौली में प्रसारण के लिये सामान की सूची :–

रेडियो केन्द्र चिचौली द्वारा केन्द्र से उपलब्ध सामग्री की सूची प्रदान की गयी जो परिशिष्ट पर संलग्न है। रेडियो केन्द्र में 01 मॉनिटर, 01 हेडफोन, 02 चेयर, 01 ऐसी, 01 माइक टेबल को सुधारने की आवश्यकता वर्तमान में खराब है। इसके अलावा 03 सीपीयू को फारमेट किया जाना है। जनरेटर के लिये शेड का निर्माण किया जाना है। रेडियो केन्द्र में केसियो, बैजो, हारमोनियम, तबला सेट, डेहकी, ढोलक, मिरदंग, टिमकी, मंजिरे, बाँसुरी, अग्निशमन यंत्र, रेडियो सेट जैसी सामग्री नहीं है, जबकि जनजातीय लोकगीतों व सामूहिक कार्यक्रमों के लिये इन वाद्य यंत्रों का केन्द्र में होना अति आवश्यक है। केन्द्र की स्थापना 2012 में हुई और तब से 6–7 वर्षों तक भी इन वाद्य यंत्रों को नहीं खरीदा गया तो जनजातीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रसारण होना संभव ही नहीं होता। केन्द्र के कर्मचारियों द्वारा अवगत कराया गया कि रेडियो केन्द्र के रखरखाव के लिये कई बार बजट आवंटन का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया किन्तु अभी तक उपलब्ध नहीं हो पाया है।

रेडियो केन्द्र में उपलब्ध सामग्रियों के वार्षिक रखरखाव के लिये भी एजेन्सी, भोपाल स्तर से रखी जानी होगी। क्योंकि कुछ कम्प्युटर से संबंधित वस्तुएँ स्थानीय स्तर पर ठीक कराना मुश्किल होता है, फलस्वरूप प्रसारण से संबंधित कार्यक्रम अवरुद्ध होते हैं। रेडियो केन्द्र चिचौली के लिये भी जनजातीय कलाकारों का मानदेय आकाशवाणी बैतूल की भाँति

स्वीकृत होना आवश्यक है, ताकि जनजातीय कलाकारों को सम्मानीय राशि का भुगतान उन्हें किया जा सके।

वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र चिचौली को प्रदत्त किये गये वन्या रेडियो की स्थिति :–

रेडियो केन्द्र चिचौली से गांवों की जनजातीय समुदाय की ग्रामवार सूची का अवलोकन कराने को कहा गया जिन्हें वन्या रेडियो प्रदत्त कराये गये थे। रेडियो केन्द्र के कर्मचारियों द्वारा अवगत कराया गया कि वन्या रेडियो केन्द्र भोपाल द्वारा लगभग 200 रेडियो सेट रेडियो केन्द्र चिचौली में लाये गये थे, किन्तु रेडियो सेट केन्द्र के उद्घाटन के समय भोपाल से आये अधिकारियों द्वारा ही वहाँ उपस्थित लोगों को वितरित किये गये तथा कुछ रेडियो सेट सामुहिक विवाह समारोह में मान. मंत्री जी के हाथों वितरित किये गये। रेडियो सेट को निर्धारित गांवों के जनप्रतिनिधियों, मुखिया या पढ़े–लिखे नौजवानों की सूची तैयार कर वितरित नहीं किये गये। लगभग 10 गांवों के क्षेत्र भ्रमण के दौरान भी किसी के पास वन्या रेडियो केन्द्र द्वारा प्रदाय किया गया रेडियो सेट देखने को नहीं मिला। रेडियो केन्द्र के समन्वयक द्वारा एक खराब रखा हुआ वन्या रेडियो सेट का अवलोकन केन्द्र में जरूर करवाया। उनका कहना था कि रेडियो सेट उनके आने के पूर्व उद्घाटन के समय वितरित किये गये थे और उनका कोई लेखा–जोखा नहीं रखा गया था।

अध्याय – चार

वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र से प्रसारित कार्यक्रमों का जनजातीय समुदाय पर प्रभाव

वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र चिचौली, जिला बैतूल के अध्यामित गोंड जनजाति के 10 ग्रामों के 60 परिवारों में जाकर अनुसूची के माध्यम तथा अनौपचारिक समूह चर्चा करके उन पर प्रसारित कार्यक्रमों का प्रभाव के बारे में जानने की कोशिश की गयी।

1. सर्वेक्षित उत्तरदाता परिवारों की जनसंख्या :–

तालिका – 01

क्रमांक	सर्वेक्षित ग्राम का नाम	सर्वेक्षित परिवार	पुरुष	महिला	योग
1.	हर्रावाड़ी	8	19	22	41
2.	बीधवा	6	14	14	28
3.	बीरपुर	6	16	15	31
4.	असाड़ी	5	17	17	34
5.	रतनपुर	5	22	17	39
6.	जीटूढाना	5	15	16	31
7.	सिंगार चौवड़ी	6	17	20	37
8.	आलमपुर	7	28	22	45
9.	दूधिया	7	24	19	43
10.	सिंगरई खापा	5	17	15	32
		60	**184** (50.92)	**177** (49.08)	**361** (100.00)

सर्वेक्षित 10 ग्रामों के 60 गोंड परिवारों की अनुसूची के आधार पर लिंगीय वर्गीकरण में 184 पुरुष तथा 177 महिलाओं सहित कुल 361 लोगों को चर्चा में शामिल किया गया। इसके अतिरिक्त वहाँ उपस्थित गैर जनजाति के लोगों को भी चर्चा में शामिल कर उनके विचारों को भी जाना गया।

2. सर्वेक्षित उत्तरदाता परिवारों के मुखिया की साक्षरता :—

तालिका — 02

क्रमांक	सर्वेक्षित ग्राम का नाम	शिक्षित मात्र	अशिक्षित	मात्र हस्ताक्षर करना जानते हैं	कुल
1.	हर्रावाड़ी	7	—	1	8
2.	बीधवा	5	—	1	6
3.	बीरपुर	4	2	—	6
4.	असाड़ी	3	2	—	5
5.	रतनपुर	4	1	—	5
6.	जीटूढाना	5	—	—	5
7.	सिंगार चौवड़ी	1	3	2	6
8.	आलमपुर	3	2	2	7
9.	दूधिया	4	2	1	7
10.	सिंगरई खापा	3	1	1	5
		39 (65.00)	**13 (22.00)**	**8 (13.00)**	**60 (100.00)**

उपरोक्त सर्वेक्षित 10 ग्रामों के 60 गोंड परिवारों के उत्तरदाताओं में 39 उत्तरदाता शिक्षित हैं। उनमें से अधिकतर मात्र पहली से प्राथमिक स्तर तक ही पढ़े हैं। उत्तरदाताओं में 22 प्रतिशत अशिक्षित तथा 13 प्रतिशत मात्र हस्ताक्षर करना जानते हैं।

3. सर्वेक्षित उत्तरदाताओं का आयु समूह :—

तालिका — 03

क्रमांक	आयुवर्ग का विवरण	पुरुष	महिला	योग
1.	18 वर्ष से 25 वर्ष तक	9	—	9
2.	26 वर्ष से 35 वर्ष तक	20	3	23

3.	36 वर्ष से 45 वर्ष तक	15	3	18
4.	46 वर्ष से ऊपर	7	3	10
		51 (85.00)	**9** (15.00)	**60** (100.00)

4. सर्वेक्षित ग्रामों की रेडियो केन्द्र से दूरी :–

तालिका – 04

क्रमांक	ग्राम का नाम	रेडियो केन्द्र से दूरी (लगभग)
1.	हर्रावाड़ी	5 कि.मी.
2.	बीधवा	7 कि.मी.
3.	बीरपुर	10 कि.मी.
4.	असाड़ी	9 कि.मी.
5.	रतनपुर	10 कि.मी.
6.	जीटूढाना	12 कि.मी.
7.	सिंगार चौवड़ी	15 कि.मी.
8.	आलमपुर	10 कि.मी.
9.	दूधिया	6 कि.मी.
10.	सिंगरई खापा	2 कि.मी.

वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र चिचौली, जिला बैतूल (मध्यप्रदेश) 10 मई 2012 को स्थापित किया गया, तथा 90.4 मेगाहार्डज फ्रिक्वेन्सी का रेडियो सेन्टर रखा गया, जिसकी 15 से 20 कि.मी. तक गांवों तक आंकी गयी। गांवों के सर्वेक्षण के दौनान मोबाइल पर फ्रिक्वेन्सी का आंकलन करने पर स्पष्ट रुप से कार्यक्रमों को सुनने में परेशानी दिखाइ दे रही थी। साथ में चल रहे समन्वयक व ड्राईवर से पूछने पर उनके द्वारा बताया गया कि कुछ गांवों में दिक्कत होती है।

5. सर्वेक्षित उत्तरदाताओं द्वारा विषयवार प्रदत्त जानकारी का विवरण :–

तालिका – 05

क्रमांक	विवरण	हाँ	नहीं	पता नहीं	योग
1.	रेडियो सेन्टर आपके जिले में कहाँ पर है, ज्ञात है।	40 (66.67)	14 (23.33)	06 (10.00)	60 (100.00)
2.	आपके पास रेडियो सेटे है।	05 (8.33)	55 (91.67)	–	60 (100.00)
3.	रेडियो केन्द्र द्वारा आपको रेडियो सेट प्रदान किया गया।	02 (3.33)	58 (96.67)	–	60 (100.00)
4.	आपके पास टी.वी. है।	25 (41.67)	35 (58.33)	–	60 (100.00)
5.	आपके पास मोबाइल है।	35 (58.33)	25 (41.67)	–	60 (100.00)
6.	कभी केन्द्र पर रेडियो प्रोग्राम देने गये हो।	04 (6.67)	56 (93.33)	–	60 (100.00)
7.	शासकीय योजनाओं का प्रसारण केन्द्र के प्रोग्रामों में होता है।	11 (18.33)	40 (66.67)	09 (15.00)	60 (100.00)
8.	प्रोग्राम सुनने के बाद शासकीय योजनाओं का लाभ लिया।	8 (13.33)	52 (86.67)	–	60 (100.00)
9.	रेडियो केन्द्र हेतु कोई प्रोग्राम दिया।	10 (16.67)	52 (83.33)	–	60 (100.00)
10.	रेडियो केन्द्र द्वारा बदलें कुछ राशि प्रदान की गयी।	04 (6.67)	06 (10.00)	50 (83.33)	60 (100.00)
11.	प्रसारित कार्यक्रमों से संतुष्ट हैं।	12 (20.00)	38 (63.33)	10 (16.67)	60 (100.00)
12.	आज के समय में रेडियो प्रसारण की उपयोगिता आपको ठीक लगती	10 (16.67)	31 (51.67)	19 (31.66)	60 (100.00)

	हैं।				
13.	वन्या कार्यक्रमों का प्रसारण रेडियो के बजाय टी.वी. में होना चाहिये।	40 (66.67)	09 (15.00)	11 (18.33)	60 (100.00)
14.	रेडियो सेन्टर से कोई कर्मचारी आपके पास कार्यक्रमों की जानकारी देने आया है।	09 (15.00)	38 (63.33)	13 (21.67)	60 (100.00)
15.	मोबाइल में प्रसारित प्रोग्राम साफ सुनाई देते हैं।	14 (23.33)	21 (35.00)	25 (41.67)	60 (100.00)
		39 (65.00)	**13 (22.00)**	**8 (13.00)**	**60 (100.00)**

1. सर्वेक्षित 10 ग्रामों के 60 उत्तरदाताओं से पूछा गया कि आपके जिले में वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र कहाँ स्थापित किया गया है तो 40 उत्तरदाताओं द्वारा बताया गया कि चिचौली में है, वहीं 14 द्वारा अनभिज्ञता बताई गयी और 06 ने कहा कि उन्हें ज्ञात नहीं है। जिन 60 उत्तरदाताओं द्वारा हाँ में जबाव दिया गया उनमें भी अधिकतर रेडियो सेन्टर देखा नहीं है, केवल सुना है।
2. उत्तरदाताओं से रेडियो सेट होने के बारे में जानकारी प्राप्त करने पर मात्र 05 उत्तरदाताओं के पास रेडियो सेट देखे गये उनमें से भी 04 के रेडियो सेअ खराब थे, जो पिछले कई साल से उनके द्वारा ठीक नहीं कराये गये।
3. सभी 10 ग्रामों के उत्तरदाताओं से पूछा गया कि वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र द्वारा आपको रेडियो वितरित किया गया था, तो सभी लोगों द्वारा इनकार किया गया और बताया गया कि गांवों में किसी को भी रेडियो प्राप्त नहीं हुआ है। जिन दो लोगों के पास वन्या का रेडियो देखने को मिला वे पहले वन्या सेन्टर में कार्यरत थे, उनके पास रखे हुये रेडियो सेट भी खराब स्थिति में थे।
4. सर्वेक्षित ग्रामों के उत्तरदाताओं से टी.वी. के बारे में जानकारी प्राप्त करने पर देखा गया कि 25 परिवारों के पास टी.वी. है और टी.वी. में चलने वाले प्रोग्रामों व गानों को देखने व सुनने के लिये आसपास के परिवार भी आते हैं।

5. अधिकतर घरों के उत्तरदाताओं के पास मोबाइल देखा गया किन्तु उनके द्वारा बताया गया कि मोबाइल बच्चे ही अपने पास रखते हैं। गाँव में बिजली नहीं आने से उनकों चार्ज भी नहीं कर पाते हैं। बच्चे फिल्मी गाने भरवाकर सुनते हैं।

6. कुछ कलाकार उत्तरदाताओं से पूछने पर ज्ञात हुआ कि वर्ष 2013–14 में पहले दो बार प्रोग्राम देने गये थे, किन्तु मानदेय बहुत कम दिया गया, जबकि बैतूल आकाशवाणी केन्द्र द्वारा 400 प्रति व्यक्ति मानदेय, आने–जाने का किराया व नास्ता प्रदान किया जाता है और मात्र 20 मिनट का प्रोग्राम लेते हैं। वन्या रेडियो केन्द्र द्वारा तो अब कई सालों से कोई सांस्कृतिक प्रोग्राम नहीं करवाया गया।

7. अधिकतर उत्तरदाताओं द्वारा नहीं में जबाव दिया गया, जिन 18 उत्तरदाताओं द्वारा हाँ में जबाव दिया गया। उनके द्वारा भी बताया कि प्रारम्भ में जब रिकॉर्डिस्ट थे तब वे बताते थे कि किस दिन विभिन्न विभागों की योजनाओं के बारे में बताया जावेगा। अब तो केन्द्र में मात्र चार लोग ही कार्यरत हैं, उसमें भी एक भृत्य, एक चौकीदार है।

8. योजनाओं के लाभ प्राप्त करने में जिन 08 उत्तरदाताओं द्वारा हाँ कहा गया, उनमें भी कुछ ने बताया कि उनके खुद के सम्पर्क से उनकों योजनाओं का लाभ प्राप्त हुआ है, रेशम विभाग के सुपरवाइजर स्वयं उनके पास आये थे, कीट पालन के लिये।

9. कुछ उत्तरदाताओं द्वारा बताया गया कि प्रारम्भ में केन्द्र का व्यक्ति आकर हमसे गोंड कहानी, दन्तकथा, जंगली जड़ीबूटी, लोकगीत आदि नोट कर ले जाते थे। किन्तु उनके बदले में उन्हें कुछ मानदेय नहीं देते थे, अब कई सालों से आ भी नहीं रहे हैं।

10. गांवों में सर्वेक्षण के दौरान कलाकारों द्वारा बताया गया कि मात्र 200 रुपये 08 व्यक्तियों के समूह को प्रति लोकगीत प्रदान किये जाते थे और तीन या चार गीतों की रिकॉर्डिंग करवायी जाती थी। एक व्यक्ति को मात्र 100 रुपये के मान से मानदेय होता था और हमारे आने जाने में ही 100 रुपये से ज्यादा व्यय हो जाता था, तो सबने जाना बन्द कर दिया।

11. रेडियो केन्द्र द्वारा वर्तमान में प्रसारित कार्यक्रमों से मात्र 12 उत्तरदाताओं द्वारा सन्तुष्टि दिखाई गयी। बाकि उत्तरदाताओं द्वारा बताया गया कि प्रोग्राम को टी.वी.

में प्रसारित होना चाहिये दूरदर्शन के माध्यम से अधिकतर उत्तरदाताओं द्वारा बताया गया कि शाम को आस–पड़ोस के लोग जिनके पास टी.वी. है उनके यहाँ प्रोग्राम व सिरियल देखने जाते है उसी में यदि गोंड़ी प्रोग्राम का प्रसारण हो तो सभी देख पायेंगे।

12. सर्वेक्षित ग्रामों में उत्तरदाताओं द्वारा बताया गया कि अब पढ़ने वाले बच्चे गोंडी बोली नहीं बोल पाते हैं, वे तो मोबाइल टी.वी. में फिल्मी गाने सुनते हैं। गांवों में अब रेडियो कहीं–कहीं एक दो परिवारों के ही पास दिखाई देते हैं, अधिकतर लोग अब दूरदर्शन के प्रसारण टी.वी. पर देखना पसन्द करते हैं। मात्र 10 उत्तरदाताओं द्वारा हाँ में जबाव दिया, अधिकतर ने आज के समय रेडियो की उपयोगिता को नहीं माना है, कारण जानने पर बताया गया कि रेडियो पर आवाज का साफ न आना, बिजली की कटौती, अधिकतर घरों में टेलीवीजन का होना है।

13. गोंडी बोली में प्रसारित प्रोग्राम को दूरदर्शन में प्रसारित करने के लिये 40 उत्तरदाताओं द्वारा सहमति प्रदान की गयी। कुछ उत्तरदाताओं द्वारा जो अधिकतर पढ़े–लिखे थे, उनके द्वारा बताया गया कि जब दूरदर्शन में मराठी, बंगाली, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, पंजाबी में प्रोग्राम आ सकते हैं तो गोंडी में भी प्रसारण हो तो अच्छा है।

14. सर्वेक्षित ग्रामों के अधिकतर उत्तरदाता खेती किसानी और मजदूरी करने वाले हैं। अधिकतर द्वारा बताया गया कि उन्हें नहीं मालूम की रेडियो केन्द्र द्वारा क्या प्रसारण किया जाता है और कब किया जाता है। इसके लिये न तो रेडियो केन्द्र के किसी कर्मचारी द्वारा उन्हें बताया गया और न ही गांव में कोई प्रचार–प्रसार होता है।

15. सर्वेक्षित ग्रामों के उत्तरदाताओं द्वारा बताया गया कि मोबाइल पर प्रसारित प्रोग्राम स्पष्ट रुप से सुनाई नहीं देते है, केन्द्र में पदस्थ कर्मचारियों द्वारा भी बताया गया कि रेडियो प्रसारण को मोबाइल पर स्पष्ट सुनने में परेशानी होती है। बिजली की कम सप्लाई होने से मोबाइल धारक मोबाइल को पूरा चार्ज भी नहीं कर पाते हैं।

वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों का गोंड जनजाति पर होने वाले प्रभाव कार्यक्रमों की उपयोगिता पर सर्वेक्षित ग्रामों के उत्तरदाताओं तथा अनौपचारिक चर्चा में भाग लेने वाले गोंड जनजाति के युवा, बुजुर्ग तथा महिलाओं द्वारा विभिन्न विषयों में अपना दृष्टिकोण रखा, जैसे–

1. विकास के प्रति जागरुकता – सर्वेक्षण के दौरान अनौपचारिक चर्चा में सभी लोगों में विकास के प्रति जागरुकता दिखाई देती है। उनके द्वारा बताया गया कि पहले घरों में मोबाइल, टी.वी., साउंड सिस्टम नहीं थे, किन्तु सड़क बनने से आवागमन का साधन हो गया, स्कूल कॉलेज खुलने से बच्चे गैर जनजाति के सम्पर्क में आये और अब चिचौली विकासखण्ड के बच्चें बैतूल, भोपाल, इन्दौर तथा कुछ सम्पन्न गोंड जनजाति के बच्चे दिल्ली तक जाकर पढ़ाई कर रहे हैं। गांव में शौचालय, पक्के घर, गाड़ी, मोटर साइकिल अब आम बात है। अर्थात शिक्षा के प्रचार–प्रसार तथा सड़क, स्कूल, कॉलेज बनने से सभी लोगों ने ग्राम पंचायत के माध्यम से गांव के विकास हेतु भी पहल करते हैं। ऐसा नहीं है कि रेडियो प्रसारण के बाद ही विकास के प्रति उत्साह दिखाई दिया, पहले से ही युवा वर्ग पढ़ाई के लिये बड़े शहरों में जाते रहे हैं।
2. उत्साह का आकलन – गोंड जनजाति के युवाओं में अपने जीवन मूल्यों के प्रति उत्साह तो दिखाई देता है, किन्तु आर्थिक तंगी तथा रोजगार आसानी से जिले में उपलब्ध न होने के कारण पढ़े लिखे युवा वर्ग बेरोजगार घूम रहे हैं। ऐसे में उनके मन में निराशा घर कर जाती है, उन्हें छोटे–मोटे कुटीर उद्योगों के प्रति शासन स्तर से प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। कुछ युवाओं का कहना था कि हमें वन्या रेडियो केन्द्र में कलेक्टर दर पर कार्यक्रमों के प्रचार–प्रसार के लिये शासन स्तर से रखा जाय।
3. जनजतीय जीवन में अर्थ का महत्व – जनजातीय समुदाय पुरातन काल में वन आधारित अर्थव्यवस्था से जीवनयापन करता रहा है। आज भी गोंड जनजाति समुदाय वनों से महुआ, जंगली वनौषधि तथा वनोपज एकत्रित करते हैं, लेकिन वनकर्मियों द्वारा अब वनोपज पर रोक लगाने से यह काम अब कम हो गया है, जनजाति समुदाय अपनी अर्थव्यवस्था को भविष्य के लिये जमा करने में नहीं रहती है, वे सबसे पहले परिवार के भरणपोषण का कार्य करते हैं। बड़े किसानों की तरह वे अपनी उपज को बाजार में बेचकर अपनी अर्थव्यवस्था को भविषय के लिये अन्य समुदायों के भाँति नहीं कर पाते हैं। लेकिन आज बदलाव के दौर में जो पढ़े–लिखे जनजाति समुदाय के युवा वर्ग शासकीय सेवा या अन्य कार्य करते है, वे अपने परिवार की भविष्य की चिन्ता कर अर्थ के महत्व को समझकर भविष्य की चिन्ता

कर अर्थ के महत्व को समझकर भविष्य के लिये योजनायें तैयार कर रहे हैं लेकिन इनकी संख्या कम ही होती है।

4. शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण – जनजाति समुदाय में शिक्षा के प्रति जागरूकता तो शिक्षा के प्रचार–प्रसार से बढ़ी है। लेकिन युवा वर्ग का नौकरी व अन्य रोजगार न मिलने के कारण उनमें नाराजगी भी दिखाई देती है, जनजातीय क्षेत्रों, स्कूल कॉलेजों को शासन द्वारा संचालित करना छात्रावासों में मुफ्त एवं भोजन व्यवस्था, किताबें, साइकिल आदि शासकीय योजनाओं के माध्यम से छात्र/छात्राओं को उपलब्ध कराने से उनमें शिक्षा के प्रति पहले की अपेक्षा दृष्टिकोण में बदलाव तो दिखाई देता है। अब बच्चे स्कूल कॉलेज में पढ़ने जाते है, लेकिन शिक्षा रोजगार मूलक न होने से लड़के लड़कियोंको रोजगार प्राप्त नहीं होता। अधिकतर बच्चे तकनीकी शिक्षा या प्रशिक्षण चाहते हैं ताकि उन्हें अपने क्षेत्र में ही रोजगार प्राप्त हो सके।

5. रेडियो से सामाजिक चेतना पर प्रभाव – सर्वेक्षित ग्रामों के गोंड उत्तरदाताओं तथा परिवार के सदस्यों द्वारा बताया गया कि आज के परिवेश में रेडियो का चलन नहीं के बराबर है। गांवों में चार–छः घरों में ही टेलीविजन होने से बाकी गांव के लोग शाम को गाने सुनने या सिरियल देखने चले जाते हैं। युवा वर्ग के लड़के–लड़की मोबाइल पर हिन्दी गाने सुनते है, अब कौन गांव में रेडियो सुनता है।

रेडियो प्रसारण का जो समय उन्हें बताया गया, तो उनका कहना था कि 8–9 बजे तो खेत पर काम करने या मजदूरी करने चले जाते हैं और शाम को आठ–नौ बजे आते हैं। रेडियो सेन्टर के कर्मचारी 9–10 बजे सुबह आते हैं और 6–7 बजे चले जाते है।

क्षेत्र में रेडियो केन्द्र के प्रसारण व कार्यक्रमों के बारे में लोगों को कुछ भी ज्ञात नहीं है, क्योंकि रेडियो केन्द्र द्वारा गांव में प्रचार–प्रसार ही नहीं किया जाता है। कुछ कलाकारों का कहना था कि प्रारंभ में जरूर रेडियो केन्द्र के रिकोर्डिस्ट गांव में आकर प्रोग्राम ले जाते थे, लेकिन चार–पाँच वर्षों से कोई नहीं आता। केन्द्र से पता करने पर पता चला कि जो रिकॉर्डिस्ट प्रारम्भ में भर्ती किये गये थे, वे वेतन कम होने से नौकरी छोड़ चुके हैं। उन्हें रेशम विभाग द्वारा कीटपालन का गांव में सुपरवीजन का कार्य सौंपा गया है और आठ–नौ हजार की राशि प्रदान की जाती

है, जबकि रेडियो सेन्टर मात्र तीन से चार हजार रुपये प्रति माह दिया जाता था, उसमें भी वाहन किराया उन्हें जेब से देकर गांव–गांव जाना पड़ता था।

गांव में सामाजिक चेतना, अधिकतर शिक्षा व आवागमन के साधन तथा शासन द्वारा चलाये जा रहे विकास कार्यक्रमों से दिखाई दी, कुआँ, सड़क बनने से गांव में अधिकतर लोगों को मजदूरी मिलने से आय में वृद्धि देखी गयी।

6. विचारों एवं सोचने के ढंग में बदलाव – यह तभी संभव हो सकता है, जब रेडियो सेन्टर सुचारु रूप से चलाया जाय, रेडियो के प्रभारी, प्राचार्य/शा.उ.उ.मा.वि. चिचौली तथा मानदेय पर रखे गये कर्मचारियों द्वारा बताया गया कि जब तक पदों की पूर्ति, वाहन की स्वीकृति, कलाकारों को उचित मानदेय, सेन्टर का रखरखाव, रिकॉर्डिस्ट के पदों की पूर्ति, सेन्टर के यंत्रों का वार्षिक रखरखाव हेतु एजेन्सी का नियुक्त होना, पदस्थ कर्मचारियों को नियमित किया जाना इन बिन्दुओं पर वन्या रेडियो सेन्टर, भोपाल जब तक समुचित ध्यान नहीं देता तो रेडियो सेन्टर चिचौली उद्देश्यानुसार प्रोग्रामों का प्रसारण करने में असमर्थ होता है।

यदि रेडियो सेन्टर के हालात मात्र रेडियो सेन्टर खोलना और शाम को बन्द करना और पदस्थ कर्मचारियों का और आकस्मिक व्यय का मानदेय निकालना ही रह जाता है तो फिर गांव में जनजातियों के विचारों एवं सोचने के ढंग में बदलाव ज्ञात करना मात्र काल्पनिक रह जाता है।

7. वास्तव में कोई असर हुआ या नहीं – वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र चिचौली को 10 मई 2012 में स्थापित किया गया था। योजना के उद्देश्य चिचौली रेडियो सेन्टर द्वारा इस प्रकार बतायें गये :–

(क) चिचौली विकासखण्ड की गोंड जनजाति का उत्थान होगा।

(ख) कल्याणकारी योजनाओं का सही क्रियान्वयन व त्वरित विकास।

(ग) शैक्षणिक गतिविधियों को गोंडी भाषा में सरल व मनोरंजक स्वरूप में प्रसारित किया जावेगा।

(घ) गोंड जनजाति की सांस्कृतिक विरासत, संगीत, रीति–रिवाजों को जीवित रखा जावेगा।

(ङ) समुदाय की उन्नति तथा मुख्यधारा से जोड़ने का कार्य किया जावेगा।

(च) रेडियो के माध्यम से मनोरंजन, समाचार, ज्ञान आदि का प्रसारण होगा।

(छ) गोंड समुदाय को भगत – भुमका, ओझा–तांत्रिक, जादू–टोना जैसी प्रथाओं को रेडियो के माध्यम से स्थानीय बोली में जागरूक करके उन्हें प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों की तरफ जाने को जागृत किया जावेगा।

(ज) रोजगार व जीवनयापन के अच्छे विकल्पों की जानकारियाँ प्रदान की जावेगी।

(झ) स्वास्थ्य संबंधी जानकारी प्रदान की जावेगी।

(ञ) वनों के संरक्षण के विषय में बताया जावेगा।

गोंड समुदाय की रेडियो केन्द्र में भागीदारी – रेडियो केन्द्र चिचौली के प्रस्ताव में पूर्व पृष्ठ पर दिये गये उद्देश्यों के अतिरिक्त रेडियो केन्द्र में क्षेत्र के गोंड समुदाय के होनहार नौजवान, उद्घोषक, संपादक, संवाददाता, कार्यक्रम निर्माण कर्मचारी, समन्वयक, फील्ड रिकॉर्डर आदि रखने का प्रावधान बताया गया है, इसके अतिरिक्त उच्च शिक्षा प्राप्त गोंड समुदाय के छात्र/छात्राओं को चयनित कर रेडियो केन्द्र के संचालन में भागीदार बनाये जाने का भी प्रावधान रखा गया है।

रेडियो प्रसारण से प्रस्ताव में बताये गये लाभ –

1. स्थानीय गोंड समुदाय एवं अन्य वर्ग के लगभग 40 हजार जनसंख्या को रेडियो प्रसारण का लाभ मिलेगा।
2. स्थानीय गोंडी बोली व हिन्दी कार्यक्रम के प्रसारण से सुनने की जिज्ञासा उनमें उत्पन्न होगी।
3. समुदाय के लोगों द्वारा स्वयं के तैयार किये गये कार्यक्रमों का प्रसारण होने से उनकी सांस्कृतिक पक्षों में समृद्धता आयेगी।
4. कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, निर्माण व योजनाओं का प्रसारण स्थानीय बोली भाषा व गोंडी में करने से अशिक्षित व्यक्ति भी उसे समझ सकेगा।
5. समुदाय को रेडियो केन्द्र में भागीदार बनाना।

रेडियो संचालन की कार्य योजना – प्रस्ताव में रेडियो संचालन की कार्ययोजना में बताया गया कि सीआरएस के कवरेज में 48 गांव आयेंगे। इनकों 6 सेक्टर में बांटकर संचालन के लिये 8 गांव का एक सेक्टर बनाकर उसमें एक–एक क्षेत्र समन्वयक व सह उद्घोषक रहेंगे। इसके अतिरिक्त प्रत्येक गांव में पत्र पेटी होगी, जिसमें ग्रामवासी अपने विचार एवं तैयार कार्यक्रमों को लिखकर डाल सकेंगे। यह पेटी क्षेत्र समन्वयक द्वारा खोलकर व विचार विमर्श कर चयनित किया जावेगा ताकि उनका प्रसारण किया जा सके

और यहीं उद्घोषक अपने–अपने क्षेत्र से कार्यक्रम रिकॉर्ड भी करेंगे। प्रत्येक 2 सेक्टर पर एक सुपरवाइजर रखने का भी प्रावधान रखा गया है, जिन्हें क्षेत्र समन्वयक मार्गदर्शन करेगा व आवश्यक तकनीकी सहयोग भी देगा।

रेडियो केन्द्र में पदों का विवरण वर्तमान में इस प्रकार बताया गया है, प्रबंधक (प्राचार्य) शासकीय उत्कृष्ट उ.मा.वि. चिचौली केन्द्र की प्रबंधक की व्यवस्था देखेंगे –

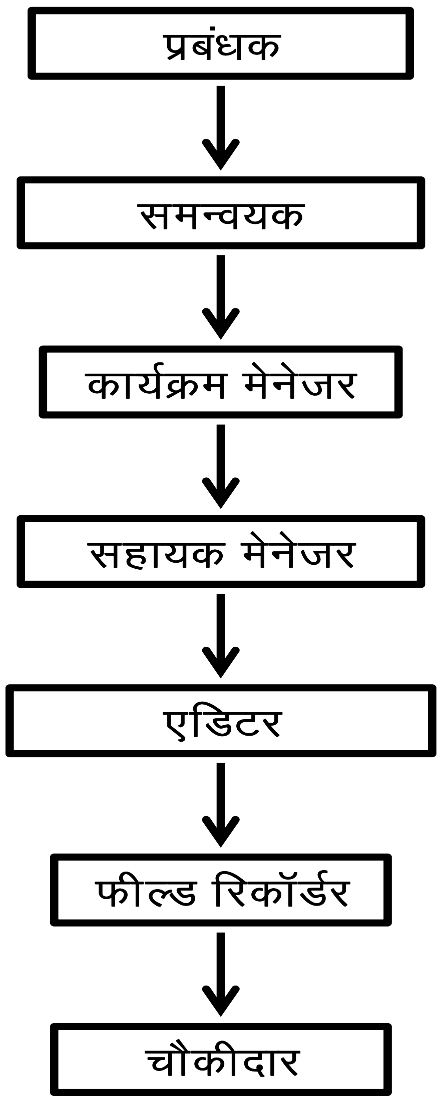

वन्या प्रकाशन के आदेश क्रमांक/वन्या/रेडियो/11/1086 भोपाल दिनांक 10.10. 2012 द्वारा श्री अजय सिंह धुर्वे को समन्वयक तथा श्रीमती नीलम गोहिया को सहायक के रूप में रखने की सहमति प्रबंधक को प्रदान की गयी। इसके अतिरिक्त श्री रमेश कुमार गोहे तथा श्री राजू यादव को सौ रुपये प्रतिदिन के मानदेय के आधार पर आवश्यकतानुसार रखने की सहमति प्रदान की गयी।

रेडियो केन्द्र के अवलोकन पर प्रबंधक द्वारा बताया गया कि वर्तमान में मात्र श्री अजय सिंह धुर्वे, समन्वयक का कार्य रेख रहे हैं। उनकी सहयोगी नीलम गोहिया है और एक चौकीदार श्री जयराम परते तथा एक भृत्य श्री गजानंद उइके है।

रेडियो केन्द्र में वर्तमान में कोई रिकॉर्डर स्क्रिप्ट राइटर, स्क्रिप्ट रुपांतरण (क्षेत्रीय भाषा वाला) उद्घोषक, बाल प्रतिभागी व गायन मण्डली के कलाकारों के रुप में कोई नहीं है। उनके द्वारा बताया गया है कि यदि वन्या रेडियो, भोपाल प्रशिक्षित तकनीकी अमले को सेन्टर पर पदस्थ नहीं करता है तो वर्तमान में कार्यरत शिक्षित दो कर्मचारी श्री अजय धुर्वे व नीलम गोहिया के जाने के बाद सेन्टर को बन्द करना आवश्यक हो जायेगा। उन्हें भी अपना भविष्य केन्द्र में कोई खास नहीं दिखाई देता। कहीं अच्छा कार्य मिलने पर उनके जाने से रेडियो सेन्टर लगभग बन्द हो जायेगा, क्योंकि इतने कम मानदेय में दूसरा व्यक्ति मिलना कठिन होगा।

अतः स्पष्ट है कि जब रेडियो केन्द्र का रखरखाव नहीं हो पा रहा है, बारसात के मौसम में छत से पानी टपकता है, दिवारों पर दीमक लगी है। सेन्टर के यन्त्रों को ठीक करने के लिये किसी भी एजेन्सी को वार्षिक ठेका नहीं दिया गया। स्थानीय स्तर पर इन इलेक्ट्रानिक यंत्रों का ठीक होना मुश्किल होता है। सेन्टर में कोई वाद्य यंत्र नहीं रखे गये है। जो कलाकार पहले प्रारंभ में बुलाये गये थे उन्हें भी सम्मानित मानदेय प्रदान नहीं किया गया।

उपरोक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुये जब रेडियो सेंटर द्वारा अपने उद्देश्यों, समुदाय की रेडियो केन्द्र में पर्याप्त भागीदारी, कार्ययोजना अनुसार संचालन व पदों की संरचना, स्थानीय लोगों को होने वाले लाभ का ही सही व सुचारु रुप से संचालन रेडियो सेन्टर द्वारा नहीं हो पा रहा है तो क्षेत्र में उसका असर दिखाई भी नहीं देगा। यदि हमें वास्तव में योजना का क्रियान्वयन सहीं ढंग से करके गोंड समुदाय को इससे जोड़ना है तो उद्देश्यों के अनुरूप उसका संचालन करना पड़ेगा। यदि रेडियो केन्द्र द्वारा अपने हितग्राहियों को 250–300 रेडियो सेट बांटे गये तो वह किन–किन लोगों को दिये गये रेडियो सेन्टर पर इसका कोई लेखा–जोखा नहीं है। गांव का जनजातीय परिवार मजदूरी कर अपने परिवार का भरण–पोषण करता है वह हजार पन्द्रह सौ का रेडियो कहाँ से खरीद कर रखेगा। उसके लिये तो परिवार का पालन करना पहले आवश्यक है और जो परिवार सम्पन्न है उनके घरों में टेलीवीजन है उन्हें रेडियो की आवश्यकता नहीं है। अतः

गांव में यदि परिवारों को रोजगार तथा उचित मजदूरी का प्रावधान पहले हो तो वे लोग स्वयं के खर्च पर रेडियो भी खरीद कर सुन सकेंगे।

अध्याय – पाँच

निष्कर्ष एवं सुझाव

निष्कर्ष –

आदिवासी विकास खण्ड चिचौली, जिला बैतूल में है। जिला बैतूल में गोंड समुदाय लगभग 58 प्रतिशत है। इस जिले में 75 प्रतिशत गोंड समुदाय की आय मासिक रुपये 1500.00 से भी कम है। विकासखण्ड चिचौली में गोंड समुदाय के बच्चे 5वीं तक 24%, 8वीं तक 19% तथा 12वीं तक 19%, एवं उच्च शिक्षा में मात्र 5%, ही पहुँच पाये हैं। बैतूल जिले में एक मात्र रेडियो स्टेशन आकाशवाणी बैतूल में है।

दिनांक 10 मई 2012 को वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र की स्थापना शासकीय उत्कृष्ट उ.मा.वि. चिचौली में की गयी। इस रेडियो केन्द्र की फ्रिक्वेन्सी 90.4 मेगाहार्टज रखी गयी तथा इसके कवरेज में 48 गांवों को रखा गया है। लगभग 15–20 किलोमीटर की रेंज के गांवों को इसमें लिया गया है। इन 48 गांवों की लगभग 40 हजार लोगों को इसका लाभ प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया है। वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र चिचौली द्वारा प्रसारित किये जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों का गोंड जनजाति पर पड़ने वाले प्रभाव व उसकी उपयोगिता पर किये गये शोध अध्ययन के निष्कर्ष इस प्रकार देखे जा सकते हैं :–

1. वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र के उद्देश्यों की पूर्ति पूर्ण रूप से नहीं हो पा रही है। विकासखण्ड में अधिकतर परिवार मेहनत–मजदूरी कर परिवार का भरण–पोषण करते हैं। वे रेडियो सेट पर 1000–1500 का व्यय नहीं कर पाते।
2. सर्वेक्षित ग्रामों में अधिकतर लोगों द्वारा बताया गया कि उनके पास रेडियो सेट नहीं है। वे अपने परिवार का भरण–पोषण मजदूरी या कृषि मजदूरी करके पूर्ण करते हैं।
3. चिचौली वन्या रेडियो सेन्टर द्वारा प्रारम्भ में जो रेडियो वितरित किये गये, वे निर्धारित गांवों के गोंड परिवारों को नहीं दिये गये और न ही सेन्टर में रेडियो वितरण का लेखा–जोखा रखा गया।
4. सर्वेक्षित ग्रामों के अधिकतर लोगों को मालूम ही नहीं है कि वन्या रेडियो सेन्टर चिचौली में कहाँ पर है, क्योंकि रेडियो सेन्टर का गांवों में कोई प्रचार–प्रसार नहीं किया गया है।

5. रेडियो सेन्टर में पिछले पाँच–छः सालों से कोई रिकॉर्डर नहीं है जो गाँव–गाँव जाकर जानकारी प्राप्त कर सके।

6. कलाकारों को पर्याप्त मानदेय न दिये जाने के कारण रेडियो सेन्टर के कर्मचारी उन्हें प्रोग्राम देने हेतु केन्द्र पर नहीं बुला पाते हैं।

7. आकाशवाणी बैतूल द्वारा गोंड कलाकारों को प्रोग्राम हेतु बुलाने पर प्रत्येक कलाकार को 400–500 का मानदेय आने–जाने का किराया व लंच दिया जाता है जो रेडियो सेन्टर, चिचौली में इस प्रकार का प्रावधान ही नहीं है।

8. अधिकतर लोगों द्वारा बताया गया कि मोबाइल पर भी रेडियो प्रसारण अच्छे से नहीं पकड़ता और स्पष्ट सुनाई नहीं देता है।

9. केन्द्र से रेडियो सेन्टर से प्रस्तुत किये गये प्रस्ताव में प्रत्येक गांव में पत्र पेटी रखने का प्रावधान तथा उसमें ग्रामवासी अपने विचार, प्रोग्राम आदि डालेंगे और उसे क्षेत्र समन्वयक खोलकर विचार–विमर्श कर प्रसारण हेतु चयन करेगा ऐसा किसी भी गांव में सर्वे के दौरान नहीं देखा गया।

10. रेडियो केन्द्र चिचौली के अवलोकन पर देखा गया कि पूरे कमरे में दीमक लगी है। कर्मचारियों द्वारा बताया गया कि भोपाल से जब भी कोई अधिकारी वन्या से आता है तो उसके संज्ञान में यह बात लाई जाती है किन्तु निराकरण आज तक नहीं हुआ हैं

11. रेडियो केन्द्र की छत से पानी टपकता है, कर्मचारी तिरपाल या काली पन्नी से छत को ढक लेते हैं फिर भी दिवारों पर व छत पर सीलन स्पष्ट दिखाई देती है।

12. अध्ययन से पता चलता है कि जब तक रेडियो सेन्टर पर विशेषज्ञ तकनीकी अमला पदस्थ नहीं किया जाता तब तक केन्द्र से अपेक्षित परिणामों की कल्पना नहीं की जा सकती।

13. मानदेय पर रखे गये लोगों के भरोसे शासन की इस महत्वाकांक्षी योजना को नहीं रखा जा सकता। उन्हें रेगुलर पद मिले वेतन प्राप्त हो पर्याप्त अमला हो। योजना का गांवों में प्रचार–प्रसार हो, उन्हें रियायती दर पर अच्छे रेडियो सेट प्रदान किये जाये।

14. कलाकारों को आकाशवाणी बैतूल की भाँति उन्हें भी प्रशिक्षण दिया जाये तथा युवा कलाकारों को तैयार कर बैतूल से बाहर अपनी कला दिखाने को प्रोत्साहित किया जाय।

15. रेडियो केन्द्र के अधिकतर यंत्रों को दुरूस्त करने की जरूरत है, जो स्थानीय बाजार में ठीक नहीं किये जा सकते उन्हें ठीक करने के लिये भोपाल–इंदौर तक लाने–लेजाने के लिये पर्याप्त बजट नहीं होता, फलस्वरूप यंत्रों के अभाव में कार्यक्रमों के प्रसारण में व्यावधान होता है।

16. शासन की इस महत्वपूर्ण योजना का संचालन मात्र दो कर्मचारी कर रहे हैं, एक समन्वयक के पद पर मानदेय के रूप में कार्यरत श्री अजय सिंह धुर्वे और उनकी सहायक श्रीमती नीलम गोहिया। इन दोनों को भी वन्या द्वारा प्रशिक्षण दिया गया है। रेडियो प्रसारण की तकनीकी डिग्री दोनों के पास नहीं है। इसके अलावा एक भृत्य व एक चौकीदार मानदेय पर रखे गये हैं।

अतः योजना के उद्देश्य, कार्ययोजना व महत्व तथा 48 गांवों के कार्यक्षेत्र को कैसे मात्र दो मानदेय के कर्मचारी सुचारू रूप से सम्पन्न करते हैं विचारणीय है।

रेडियो सेन्टर के प्रबंधक, प्राचार्य महोदय का कहना है कि बिना अमले के रेडियो सेन्टर कैसे चलाया जावेगा। न कोई रिकॉर्डिस्ट है, न केशियर है, न कोई कार्यालय संचालन का लिपिक है, यदि इन दो मानदेय कर्मचारियों में से कोई एक भी अच्छी जगह चयन होने पर चला गया तो रेडियो सेन्टर आगे नहीं चल सकता। रेडियो सेन्टर के रिकॉर्ड व नस्तियाँ विधिवत संधारित नहीं देखी गयी। महत्वपूर्ण कागजों को अलग–अलग फाइलों में नस्ती कर रखा गया है। विषयवार नस्तियों का संचालन नहीं किया गया। विषयवार नस्ती संचालन व अन्य कागजों को अलग नस्ती में रखने हेतु मौलिक बताया गया। रेडियो सेन्टर के आय–व्यय का लेखाजोखा, सी.एस. से ऑडिट करवाया जाता है।

सुझाव –

वन्या सामुदायिक रेडियो सेन्टर चिचौली के सुचारू रूप से संचालन हेतु निम्नांकित सुझाव हो सकते हैं :–

1. रेडियो सेन्टर के रखरखाव हेतु पर्याप्त बजट का प्रावधान रखा जाना आवश्यक है।
2. रेडियो सेन्टर के तकनीकि यंत्रों के वार्षिक रखरखाव हेतु एक एजेन्सी नियुक्त होनी आवश्यक है, जो कि सालभर शिकायत आने पर उन यंत्रों को ठीक कर सके।
3. योजना के उद्देश्यानुसार स्वीकृत पदों को वेतनमान के आधार पर पदस्थ किया जाना ताकि कर्मचारी के ऊपर प्रसारित प्रोग्रामों व अन्य वस्तुओं की जिम्मेदारी निर्धारित हो सके। मानदेय पर रखा व्यक्ति कभी भी अच्छी नौकरी मिलने पर छोड़कर चला जायेगा, जैसे कि रिकॉर्डिस्ट छोड़कर चले गये हैं।
4. सेन्टर में पुनः रिकॉर्डर के पदों को भरा जाय ताकि, प्रसारण समयानुसार व प्रस्तुत विषयानुरूप किया जा सके।
5. रेडियो सेन्टर पर क्षेत्रीय भ्रमण के लिये वाहन व्यवस्था का होना भी आवश्यक है।
6. कलाकारों को आकाशवाणी बैतूल के अनुरुप मानदेय स्वीकृत कर बजट में प्रावधान करना।
7. रेडियो सेन्टर के लिये अपनी खुद की वातानुकूलित भवन का होना आवश्यक है।
8. रेडियो सेन्टर में गोंड कलाकारों को उनके जनजातीय वाद्य यंत्रों को क्रम कर रखा जाना आवश्यक है।
9. वार्षिक पर्याप्त नियमित बजट आवंटन भोपाल वन्या रेडियो द्वारा प्रत्येक सेन्टर के लिये रखा जाना आवश्यक है।
10. रेडियो सेन्टर चिचौली के माध्यम से वन्या द्वारा गोंड ग्रामों में वार्षिक बजट में प्रावधान करके रियायती दर पर हितग्राहियों को कम्पनी के रेडियो सेट प्रदान किया जाना चाहिये।
11. रेडियो केन्द्र की फ्रिक्वेन्सी को बढ़ाना आवश्यक है, क्योंकि प्रसारण स्पष्ट रूप से सुना जा सके।
12. प्रसारित प्रोग्राम सेन्टर द्वारा सुबह 6.00 बजे से 11.00 बजे तक तथा शाम को 5.00 बजे से 10 बजे तक किया जाता है। जबकि सेन्टर पर मात्र दो कर्मचारी ही पदस्थ

है। यदि पर्याप्त कर्मचारी सेन्टर में पदस्थ होते तो शिफ्ट अनुसार सेन्टर में 10 बजे राशि तक कार्य कर सकते हैं।

13. रेडियो सेन्टर पर मूलभूत सुविधाओं का होना भी आवश्यक है, ताकि प्रोग्रामों का संचालन सुचारू रूप से हो सके।

वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र चिचौली के अध्ययन में निकले निष्कर्ष के आधार पर दिये गये सुझावों को अमल में लाने से शायद इस योजना का लाभ सही रूप में क्षेत्र के गोंड समुदाय के लोगों को मिल सकेगा।

परिशिष्ट –

1. व्यक्तिगत अध्ययन।
2. रेडियो सेन्टर में उपलब्ध सामग्री की सूची।
3. शोध अनुसूची।
4. उत्तरदाताओं की सूची।
5. क्षेत्र के छायाचित्र।
6. अन्य प्रपत्र।

परिशिष्ट–1

1. **व्यैक्तिक अध्ययन –**

श्री दिलीप उइके, पिता श्री फूलचंद उइके, उम्र–38 वर्ष, शिक्षा–बी.कॉम पास, पता–ग्राम वीरपुर, चिचौली के रहने वाले हैं। श्री दिलीप उइके वर्ष 2012 में रेडियो सेन्टर चिचौली में रिकॉर्डर के पद पर कार्य करते थे। इन्हें रुपये 4500.00 प्रतिमाह मानदेय दिया जाता था। श्री दिलीप उइके के परिवार में कुल 7 सदस्य हैं, परिवार में सात सदस्यों की भरण–पोषण की जिम्मेदारी श्री दिलीप उइके के ऊपर है। तीन एकड़ जमीन है वह भी सिंचित नहीं हैं

श्री दिलीप उइके द्वारा चर्चा में बताया गया कि रेडियो सेन्टर पर जो रेडियो सेट आये थे, वे गांव के लोगों को न देकर उद्घाटन के समय उपस्थित लोगों को ही भोपाल के अधिकारियों द्वारा बांट दिये गये थे और इसी कारण उनका लेखा–जोखा केन्द्र में प्राप्त नहीं है। जबकि वह रेडियो सेट चिचौली रेडियो सेन्टर को 10 रेडियो सेट प्रति गांव को भी दिये जाते तो अच्छा रहता। एक रेडियो सेट इनके पास है जो खराब हालत में है। इन्होनें रिकॉर्डर के पद पर चार साल काम किया इनका कहना था, वे गांव–गांव जाकर कथा, कहानी, लोकगीत, वनौषधि आदि लगभग 30 घंटे के प्रोग्राम लाने होते थे, हमें 150.00 रुपये प्रतिदिन अर्थात 4500.00 रुपये महीने का मानदेय होता था। जिस दिन नहीं जाते थे मानदेय नहीं मिलता था। अपनी बाइक से गांव–गांव जाना, लोगों से बात करके प्रोग्राम के लिये तैयार करना आदि में पूरा दिन लग जाता था। गांव–गांव जाने में पेट्रोल व अन्य चाय–नाश्ते में ही मेरा महीने का 2000.00 रुपये के आसपास खर्च होता था, तो मात्र शेष 1500.00 रुपये में घर के सात व्यक्तियों का खर्चा कैसे उठा पाता। गांव में भी जिस व्यक्ति के पास प्रोग्राम के लिये जाते थे वह भी सोचता था कि उसे भी कुछ 100–200 रुपये मिले। बाद में कुछ कलाकारों ने तो प्रोग्राम देने से ही मना कर दिया।

गांव में बहुत सारे लोगों के पास रेडियो सेट नहीं है। मोबाइल में स्पष्ट सुनाई नहीं देता। गांव में जिन दो–चार घरों में टेलीवीजन है लोग वहाँ सिरियल देखने चले जाते हैं। श्री दिलीप उइके जी का कहना है कि इतने कम मानदेय में वन्या रेडियो सेन्टर में रिकॉर्डिस्ट का कार्य करना आसान नहीं है। मैं से लोकल था तो चार साल कर भी दिया मेरे छोड़ने के बाद कोई भी वहाँ रिकॉर्डर का कार्य दो–तीन महीने से ज्यादा नहीं कर सका।

श्री दिलीप उइके के द्वारा बताया गया कि वे अब गांव में से रेशम विभाग की ओर से गांव में चल रहे पाँच–छः रेशम कीट उद्योग के फार्म को देखते हैं। रेशम विभाग द्वारा उनकी ट्रेनिंग की गयी है और उन्हें 7500.00 रुपये प्रतिमाह सुपरवीजन के दिये जाते हैं। अब उन्हें गांव–गांव भी नहीं भटकना पड़ता और गांव में ही अपने खेतों में काम करते हुये रेशम सेन्टरों को देखते है और लोगों को प्रशिक्षण देते हैं अब वन्या रेडियो की नौकरी से ज्यादा प्रसन्न हैं।

2. व्यैक्तिक अध्ययन –

श्री लिपु कवड़े जनजाति गोंड ग्राम असाड़ी के रहने वाले हैं। इनकी उम्र 42 साल है। इनके परिवार में पाँच सदस्य हैं, इनकी पत्नी और तीन बच्चे है। इनके पास 2 एकड़ जमीन है जो सिंचित नहीं है। लिपु कवड़े ढोलक व हारमोनियम बजाते हैं। इनकी आठ आदमियों की गायन मण्डली है तथा खुद के वाद्य चंत्र हैं

इनका कहना था कि वन्या रेडियो द्वारा हमें कभी नहीं बुलाया गया। एक बार जरुर गांव में जब हम रियलसल कर रहे थे तो हमारे गाने रिकार्ड करके श्री दिलीप उइके ले गया था। लेकिन हमें उसके बदले कोई मानदेय नहीं दिया गया।

श्री लिपु कवड़े जी द्वारा बताया गया कि वे कई बार आकाशवाणी बैतूल में अपनी टीम के साथ गोंड लोकगीतों का कार्यक्रम करने जाते हैं। आकाशवाणी बैतूल टीम के प्रति सदस्य को 400 से 500 रुपये तक मानदेय तथा आने–जाने का किराया तथा लंच दिया जाता है और गोंडी लोकगीतों का कार्यक्रम मात्र 20 मिनट का रहता है। वन्या रेडियो वाले 200 रुपये प्रति लोकगीत प्रति 8 सदस्यों की टीम को देने को कहते हैं। वह तो आने–जाने का ही पूरा नहीं पड़ता। एक दिन की मजदूरी ही 200 रुपये प्रति व्यक्ति होती है।

इनका कहाना है कि रेडियो सेन्टर चिचौली को मानदेय बढ़ाकर कलाकारों को जिले से बाहर भी ले जाना चाहिये। प्रत्येक ग्राम के लगभग 10 परिवारों को कम्पनी के रेडियो सेट देने का प्रावधान भी करना चाहिये। गांव में इसका प्रचार–प्रसार होना आवश्यक है।

3. **व्यैक्तिक अध्ययन –**

श्री डोमासिंह कुमरे ग्राम आलमपुर के जनपद सदस्य हैं। इनकी उम्र 45 साल है तथा परिवार में चार सदस्य है, जिसमें पत्नी तथा दो बच्चे हैं। इन्होंने 10वीं तक शिक्षा प्राप्त की है। श्री डोमासिंह कुमरे जी ने बताया कि उनके पास 10 एकड़ जमीन है। बच्चे हॉस्टल में रहकर पढ़ते है। खेती में परिवार के भरण–पोषण हेतु पर्याप्त अनाज होता हैं

इनके द्वारा बताया गया कि उन्होंने सुना है कि चिचौली में वन्या रेडियो सेन्टर खुला है। लेकिन सेन्टर पर कभी जाना नहीं हुआ है और न ही उन्हें प्रसारित प्रोग्रामों के बारे जानकारी है। उनके द्वारा बताया गया कि हमारे घर में टेलीविजन है, साउंड सिस्टम है और मोबाइल भी है, लेकिन रेडियो नहीं है। अब रेडियो का जमाना रहा भी नहीं। गांव में किसी के पास भी रेडियो नहीं है। जिन घरों में टी.वी. है लोग वहीं गाने सुनने या सिरियल देखने चले जाते हैं। युवा वर्ग मोबाइल से हिन्दी गाने लोड़कर खुद देखने लगते हैं। युवा वर्ग को गोंडी बोली भाती भी नहीं है।

उनके द्वारा बताया गया कि जब तक जनजागरण व प्रचार–प्रसार नहीं होगा, कार्यक्रम गांव के बुजुर्ग व जानकार व्यक्तियों से नहीं लिये जावेंगे, तब तक इसका कोई औचित्य नहीं है। उन्होंने बताया कि इसी से पता चलता है कि विकासखण्ड में रेडियो सेन्टर खोला गया और किसी भी जनप्रतिनिधि को न तो कभी बुलाया गया और न ही उन्हें रेडियो सेट दिया गया।

यदि रेडियो केन्द्र से सही प्रोग्राम प्रसारित करवाने का विचार शासन रखता है तो विकासखण्ड के पंच, सरपंच, जनपद सदस्य आदि को रेडियो सेन्टर पर बैठक करके प्रोग्रामों के बारे में सहमति प्राप्त की जावे। उन्हें अच्छी कम्पनी के रेडियो सेट उपलब्ध कराये जावे। जनप्रतिनिधियों से भी प्रोग्राम प्राप्त किये जावे। आदिवासियों की समस्याओं पर चर्चा हो उसके निराकरण के उपाय भी प्रोग्रामों में शामिल किये जावें।

युवा वर्ग के लड़के–लड़कियों के लिये गोंडी भाषा के लोकगीत, वाद–विवाद प्रतियोगितायें आयाजित की जावे। प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्तर पर आने वाले को पुरस्कार से सम्मानित करने का प्रावधान हो। इन सब कार्यक्रमों को रेडियो सेन्टर में करने से युवा वर्ग अपनी बोली भाषा को बोलने के लिये प्रोत्साहित होगा। इसके लिये भोपाल से बजट की पर्याप्त व्यवस्था पदों की संरचना आदि व्यवस्था को किया जाना आवश्यक हैं नहीं तो फिर कागजी खानापूर्ति में शासन की योजना ऐसी ही चलेगी जैसे चलती आ रही है।

परिशिष्ट – 02

वन्या रेडियो केन्द्र चिचोली में उपलब्ध सामान सी सूची

क्र.	सामग्री का नाम	सामग्री का संख्या	सामग्री की स्थिति					रिमार्क
			सही		खराब		योग	
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1.	मोनीटर एसर	3	2	सही	1	खराब	3	सुधार की आवश्यकता है।
2.	सी.पी.यू.	3	3	सही			3	फारमेट करना है।
3.	माईक एसएम 57	3	3	सही			3	
4.	माईक एसएम 58	3	3	सही			3	
5.	माईक स्टेण्ड बड़े	2	2	सही			2	
6.	माईक स्टेण्ड छोटे	3	3	सही			3	
7.	पेन रिकॉर्डर सोनी कम्पनी	2	2	सही			2	
8.	स्पीकर बड़े	2	2	सही			2	
9.	हेडफोन	1		सही	1	खराब	1	
10.	रोलिंग चेयर बड़ी	1		सही			1	
11.	सिम्पल गद्दी चेयर	4		सही	2	खराब	4	
12.	फायवर चेयर	4	4	सही			4	
13.	मिक्सर (Basdl sf-10/2)	1		सही			1	
14.	रेडियो PHILPS (काला)	1		सही			1	
15.	AC (L.G.)	2	1	सही	1	खराब	2	रिपेयरिंग की आवश्यकता है।
16.	जनरेटर महिन्द्रा	1	1	सही			1	शेड बनाना है।
17.	ट्रांसमीटर मशीन	1		सही			1	

18.	माइक केबल	11	10	सही	1	खराब	1	
19.	आर.जे. स्टेण्ड	1	1	सही			11	
20.	F.V./20 माईक Sony	1	1	सही			1	
21.	U.P.S.	1	1	सही			1	
22.	U.P.S. बैटरी	8	1	सही			8	
23.	MP3 USB Rec. & Play (Sony)	1	1	सही			1	
24.	स्टेपलाइजर	1	1	सही		1	1	
25.	बड़ी अलमारी	1	1	सही		1	1	

साक्षात्कार अनुसूची

वन्या सामुदायिक रेडियों केन्द्रों द्वारा प्रसारित किये जा रहे विभिन्न कार्यकमों का संबंधित जनजातीय समुदायों पर होने वाले प्रभाव तथा उनकी उपयोगिता का अध्ययन

1. **सामान्य जानकारी –**

1.2 वन्या सामुदायिक रेडियो केन्द्र का नाम/स्थान.. विकासखण्ड/तहसील.......................... जिला............................ स्थापन्न का दिनांक/वर्ष.......... संचालित कर रही संस्था का नाम... मुख्यालय से दूरी.......... क्षेत्र में निवासरत जनजातियों के नाम................................ प्रसारण क्षेत्र की जनजातीय बोलियाँ........................ प्रसारण की बोली.......................... रेडियों केंद्र प्रभारी का नाम/पद.. केंद्र में कुल कर्मचारियों की संख्या..............................

2. **रेडियो केन्द्र से प्रसारित किये जाने वाले प्रोग्राम –**

2.1 कौन–कौन से प्रोग्राम आपके केन्द्र से प्रसारित होते हैं, उनके नाम......................................

2.2 प्रसारित प्रोग्रामों का समय क्या है ?...

2.3 एक दिनं में कितने बार प्रसारण होता है ?...

2.4 प्रसारण की अवधि कितनी रहती है ?..

2.5 महीने में कितने दिन प्रोग्रामों का प्रसारण होता है ?...

2.6 माह में कुल कितने प्रोग्रामों का प्रसारण किया जाता है ?..

2.7 क्या प्रोग्रामों में शासकीय योजनाओं के बारे में बताया जाता है ? हाँ/नहीं यदि हाँ तो उन योजनाओं के क्या नाम है ?...

2.8 आपके प्रसारण से जनजातियों पर क्या–क्या प्रभाव दिखाई देता है। जैसेः–......................

2.9 क्या आपने कभी क्षेत्र की जनजातियों के वरिष्ठ लोगों से पूछ कर उनकी इच्छा अनुरूप प्रोग्राम तैयार किये ? हाँ/नहीं यदि हाँ तो कौन से ?..

2.10 जिस जनजातीय बोली में प्रसारण होता है, क्या उसका कोई पुरूष/महिला रेडियो केन्द्र में कार्यरत हैं ? हाँ/नहीं यदि हाँ तो कितने लोग है।..

2.11 प्रसारित प्रोग्रामों में वहाँ के जनजातीय गीतों का प्रसारण होता है। हाँ/नहीं

2.12 रेडियो केंद्र द्वारा जनजतातियों को रेडियो सेट प्रदान किये गये थे ? हाँ/नहीं, यदि हाँ (तो कितने बैंड का)...................................... कुल संख्या..................... ग्रामवार सूची.................................

2.13 किस कम्पनी का रेडियो सेट प्रदाय किया गया और किस वर्ष किया गया ?....................

2.14 प्रसारित प्रोग्रामों में जनजातियों के स्वास्थ्य कृषि, शिक्षा, रोजगार वनौषधि, विपणन केन्द्र आदि की जानकारी प्रदान की जाती है ? हाँ/नहीं यदि हाँ तो नाम बतावे।......................

2.15 क्या आपके द्वारा बाँटे गये रेडियो सेट अभी जनजातियों के पास चालू हालत में है ? हाँ/नहीं/मालूम नहीं

2.16 रेडियो केन्द्र को विगत तीन वर्षो के बजट का आय–व्यय विवरण की जानकारी।.........................

2.17 क्या वन्या रेडियो की उपयोगिता है? हाँ/नहीं, यदि हाँ तो कैसे..............................

3. **क्षेत्र में निवासरत जनजातीय समुदाय की जानकारी –**

परिशिष्ट – 04

उत्तरदाताओं की सूची

क्रमांक	ग्राम का नाम	उत्तरदाता		उम्र
1.	हर्रावाड़ी	1.	श्री स्वरूप सिंह उइके	42
		2.	श्री सुरु धुर्वे	32
		3.	श्री गणेश उइके	55
		4.	श्री बसन्त उइके	36
		5.	श्री चंवर सिंह उइके	40
		6.	श्री लालमन परस्ते	28
		7.	श्री जयराम परस्ते	21
		8.	श्री अमरु उइके	24
2.	बीधवा	9.	श्री मोहनलाल धुर्वे	42
		10.	श्री गोलमंद मर्सकोले	32
		11.	श्री दीपचंद धुर्वे	35
		12.	श्री नरेश परस्ते	28
		13.	श्री रामलाल परस्ते	39
		14.	श्री ओझा सिंह इवने	70
3.	बीरपुर	15.	श्री दिलीप उइके	42
		16.	श्री मनीराम उइके	38
		17.	श्री मनु उइके	45
		18.	श्री शोभाराम कवड़े	40
		19.	श्री जुगनी कवड़े	45
		20.	श्री पंचम कवड़े	32
4.	असाड़ी	21.	श्री लिपु कवड़े	35
		22.	श्री चंवल सिंह उइके	40
		23.	श्री राजू परते	32
		24.	श्री भगत सिंह उइके	30

		25.	श्री माली सिंह उइके	40
5.	रतनपुर	26.	श्री श्यामलाल उइके	68
		27.	श्री केशर सिंह उइके	28
		28.	श्री प्रेम सिंह कवड़े	24
		29.	श्री जुगराम धुर्वे	24
		30.	श्री कमलेश कवड़े	23
6.	जीटूढाना	31.	श्री शिवराम नरे	26
		32.	श्री रामचरण उइके	22
		33.	श्री कमलेश उइके	27
		34.	श्री भोलाराम उइके	22
		35.	श्री रामचन्द्र मर्सकोले	30
7.	सिंगार चौवड़ी	36.	श्रीमती विसोन्दी धुर्वे	30
		37.	श्री श्याम किशोर कुमरे	35
		38.	श्री धमन धुर्वे	24
		39.	श्रीमती रामे धुर्वे	32
		40.	श्री फगन सिंह उइके	22
		41.	श्री ददू धुर्वे	52
8.	आलमपुर	42.	श्री डोमा सिंह कुमरे	32
		43.	श्री कगनू मर्सकोले	48
		44.	श्री वसतीराम कुमरे	36
		45.	श्री राजू कुमरे	26
		46.	श्री मनोज धुर्वे	25
		47.	श्री शोभाराम उइके	35
		48.	श्री वीरमसिंह धुर्वे	32
9.	दूधिया	49.	श्री सुनील करोचे	28
		50.	श्री अशोक करोचे	30
		51.	श्रीमती सरलो परते	37

		52.	श्री सुखदेव गजाम	28
		53.	श्री सूरज उइके	38
		54.	श्री प्रकाश धुर्वे	39
		55.	श्री जिलूसिंह काकोड़े	60
10.	सिंगरई खापा	56.	श्री नीतेश सिरशाम	39
		57.	श्री लक्ष्मन सिरशाम	37
		58.	श्री अजय सिरशाम	36
		59.	श्री अशोक धुर्वे	30
		60.	श्री गन्नू धुर्वे	60

अध्ययन से संबंधित छायाचित्र

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA